Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2024 5(1), 829–831

WOMEN'S LIFE IN WOMEN'S AUTOBIOGRAPHIES

महिला आत्मकथाओं में स्त्री जीवन

Poonam Devi[1], Priyanka [1]

[1] Associate Professor, Hindi Department, Sabarmati University Ahmedabad, Gujarat

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.3772

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: After studying the autobiographies of women writers of Hindi, it becomes clear that they have conveyed the experiences of reality experienced in their lives to others. Through this, women writers have done an important work of establishing their existence through writing. Autobiography has its own special place in literature. In autobiography, the qualities and defects of the writer and the life experienced by her are elaborated. The accepted story of the best autobiographies of Hindi is not just the story of one woman but the story of the whole era. In the Hindi literature, where the tradition of women's autobiography was completely lacking, now the publication of autobiographies of women writers one after the other is proof of the fact that now the bonds of social system on women have loosened somewhat.

Hindi: हिन्दी की स्त्री लेखिकाओं की आत्मकथाओं का अध्ययन करने के उपरांत यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने अपने जीवन में भोगे हुए यथार्थ के अनुभवों को दूसरों तक पहुँचाया है। जिससे स्त्री लेखिकाओं ने लेखन के माध्यम से अपने अस्तित्व को स्थापित करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। साहित्य में आत्मकथा का अपना विशेष स्थान है। आत्मकथा में लेखक के गुण-दोष तथा स्वयं का भोगे गए जीवन का विस्तार होता है। हिंदी की उत्कृष्ट आत्मकथाओ में स्वीकृत सिर्फ एक महिला की कथा नहीं पूरे युग की कथा है। जिस हिन्दी साहित्य में महिला आत्मलेखन की परंपरा का नितांत अभाव था, वहाँ अब महिला साहित्यकारों की एक के बाद एक आत्मकथाओं का प्रकाश में आना इस बात का प्रमाण है कि अब महिलाओं पर सामाजिक व्यवस्था के बंधन कुछ शिथिल हुए है।

Keywords: Existence, Self-Reliance, Woman's Pain, Guilt of Being a Woman, Sensitivity, Will to Live, Rebellion Against Neglect and Restrictions, Devaluation of Culture अस्तित्व, आत्मनिर्भरता, स्त्री की वेदना, स्त्री होने का अपराध बोध, संवेदनशीलता, जिजीविषा, उपेक्षाओं व प्रतिबंधों के प्रति विद्रोह, संस्कृति का अवमूल्यन

1. प्रस्तावना

मूल शोध: आत्मकथा साहित्य की ऐसी विधा है जिसमें लेखक या लेखिका द्वारा लिखी हुई स्वयं की जीवनी होती है। जिसमें वह अपने व्यक्तित्व से जुड़े तमाम आयामों को समाज के सामने लाता है। हिंदी की उत्कृष्ट आत्मकथाओ में स्वीकृत सिर्फ एक महिला की कथा नहीं पूरे युग की कथा है। आत्मकथा के संदर्भ में चन्द्रकिरण सौनरेक्सा लिखती हैं कि “आत्मकथा अर्थात् किसी व्यक्ति की जीवन यात्रा। विश्व के सभी मनुष्य छोटा बड़ा जितना भी जीवन जीते हैं वही उनकी जीवन यात्रा होती है आत्मकथा तभी जीवन के लिए उपयोगी होगी जब उस यात्रा कथा में पाठक को समाज, युग या मनुष्य का वर्णन रसमय और वास्तविक रूप में प्रतिबिम्बित मिले, उसे पढ़कर पाठक उन बुराइयों के प्रति सचेत हो जो समाज को पिछड़ापन देती हैं।”1

1) **स्त्री जीवन की अभिव्यक्ति:** संवेदनशीलता स्त्री जीवन की वह विशेषता है जिसके कारण स्त्री मानव जीवन के सूक्ष्मताओं को सर्वाधिक भली-भांति विश्लेषित कर पाती है और निस्संकोच अपने भावों व अनुभवों को अभिव्यक्ति प्रदान कर पाती है। वास्तव में वह एक ही समय में दो दुनिया जीती है। उसका बहिरंग व्यक्तित्व उसके परिवार एवं समाज को समर्पित होता है परंतु अंतरंग व्यक्तित्व स्वेच्छा से जीवन को संपूर्णता से जीने की जिजीविषा के साथ-साथ परिवार एवं समाज की उपेक्षाओं व प्रतिबंधों के प्रति विद्रोह करने को आतुर होता है। जब भी वह जीवन को स्वयं की शर्तों पर जीने की कोशिश करती है तो समाज में इसे संस्कृति का अवमूल्यन माना जाता है। जब वह अपने अस्तित्व की तलाश करने का प्रयास करती है तो उसे तरह-तरह की नकारात्मक प्रतिक्रियाओं का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार अपने अस्तित्व, अस्मिता एवं

अभिव्यक्ति के लिए संघर्ष करते-करते ही उसका पूरा जीवन निकल जाता है। स्त्री को लेकर मस्तराम कपूर कहते हैं कि ''मानव सभ्यता के सारे ऊँचे दावे समाज में स्त्रियों की स्थिति को देखते हुए खोखले सिद्ध होते हैं। इस मामले में पशुओं की सभ्यता मनुष्य सभ्यता से सौ गुनी श्रेष्ठ ठहरती है।''2

2) **महिला आत्मकथा लेखन का आरंभ:** शिक्षा प्राप्ति से स्त्री को नवीन चेतना एवं शक्ति का अनुभव हुआ। स्त्रियों ने पुरुष सत्तात्मक समाज को चुनौती देते हुए अपने अस्तित्व एवं स्वाभिमान के बारे में आरंभ किया और अपनी अनुभूतियों एवं आन्तरिक द्वन्द्व को फलक पर उतारा। ग्रामीण निरक्षर साधन विहीन स्त्री अपनी अनुभूति को लोकगीतों-लोककथाओ में या फिर घर आँगन के कैनवास पर अभिव्यक्त करती है तो शिक्षित एवं लेखन में समर्थ कवयित्री या कथाकार अपनी रचनाओं में अपनी भावनाओं को विस्तार देती है। वर्तमान समय में यह जीवनानुभूति आत्मकथाओं के माध्यम से और सशक्त एवं प्रामाणिक रुप से उभर कर आयी है। हिन्दी साहित्य में महिला आत्मकथालेखन 20वीं सदीं के अंत से आरंभ हुआ है। जिस हिन्दी साहित्य में महिला आत्मलेखन की परंपरा का नितांत अभाव था, वहाँ अब महिला साहित्यकारों की एक के बाद एक आत्मकथाओं का प्रकाश में आना इस बात का प्रमाण है कि अब महिलाओं पर सामाजिक व्यवस्था के बंधन कुछ शिथिल हुए है।

3) **महिला आत्मकथाएँ:** साहित्य में उभरे 'स्त्री-विमर्श' के माध्यम से भी स्त्री को अपने अनुभवों को व्यक्त करने की स्वतंत्रता प्राप्त हुई है। इसलिए अनेक लेखिकाओं ने अपनी-अपनी आत्मकथाएँ लिखी हैं। इस शोध-पत्र में मैत्रेयी पुष्पा की 'कस्तूरी कुण्डल बसै' और 'गुड़िया भीतर गुड़िया', प्रभाखेतान की 'अन्या से अनन्या', मन्नू भण्डारी की 'एक कहानी यह भी', कृष्णा सोबती की 'गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान' को शामिल किया गया है। आलोच्य आत्मकथाएँ नारी संघर्ष की कड़ी बनकर हमारे सामने उभरती हैं। आत्मकथाओं में नारी के विविध संघर्षो को चेतना के स्तर पर चित्रित करने में, नारी संघर्ष की मनोवृत्तियों को उभारने में आत्मकथा लेखिकाएँ सफल रही हैं। महिला आत्मकथाकारों का यह संघर्ष समाज को प्रतिबिम्बित करता हुआ व्यापकता और परिणाम के साथ उसी समाज को आईना दिखाता है। इन आत्मकथाओं में सिर्फ लेखिकाओं के निजी जीवन का ब्यौरा मात्र नहीं है, बल्कि ये नारी के मनोविज्ञान को समझने में भी सहायक है। अपनी आत्मकथाओं के माध्यम से नारियों ने सदियों से चली आ रही स्वत्वहीनता के मौन को तोड़ा है तथा अपनी खामोशी को गहरे मानवीय अर्थ दिये हैं। साथ ही कैसे एक स्त्री का व्यक्तित्व आकार लेता है, कैसे नारी का शोषण हर स्तर पर किया गया जिसके खिलाफ उन्हें संघर्ष करना पड़ा और आत्मनिर्भरता की ओर वे किस सजगता से सधे कदमों से बढ़ती हैं और अपने अस्तित्व की झलक किस प्रकार पूरी दुनिया को दिखाती हैं, इसका पूरा वृत्तान्त इन आत्मकथाओं में है।

4) **महिला आत्मकथाओं में स्त्री जीवन:** 'एक कहानी यह भी' की लेखिका मन्नू भण्डारी का समूचा जीवन संघर्ष से युक्त है। जिससे विवाह के लिये इतना संघर्ष किया उसी व्यक्ति ने विवाहेत्तर जीवन का एक-एक पल मन्नू को संघर्ष के लिए रचा। उनकी यह आत्मकथा मानो स्त्री संघर्ष की कहानी है। वे लिखती हैं "उस समय मुझे लगता था कि राजेन्द्र से विवाह करते ही लेखन के लिए तो जैसे राजमार्ग खुल जाएगा और उस समय यही मेरा मात्र काम्य था। उस समय कैसे मैं भूल गई कि शादी करते ही मेरे व्यक्तित्व के दो हिस्से हो जाएँगे- लेखक और पत्नी।"3

मन्नू जी की सारी उम्मीदें हिममारे कमल के पत्तों की भाँति एक -एक कर बिखरती गयी। पुरुष के कई रुप होते हैं जो समय-समय पर बाहर आते-जाते हैं। परिवार की सेवा, उसकी तीमारदारी का दण्ड स्त्री को निश्चित रुप से मिलता है। यही दण्ड मन्नू भण्डारी को मिला। राजेन्द्र जी मन्नू जी से कहते हैं कि 'देखो, छत जरुर हमारी एक होगी। लेकिन जिन्दगियाँ अपनी-अपनी होंगी। बिना एक दूसरे की जिन्दगी में हस्तक्षेप किए, बिल्कुल स्वतंत्र, मुक्त और अलग। मन्नू के जीवन का यही यथार्थ था, यही पारिवारिक जीवन संघर्षों का सत्य भी। महिला आत्मकथाएँ महिलाओं के संघर्ष की व्यथा के साथ-साथ उनके हौंसलों की उड़ान भी है। ऐसे जुझारु व्यक्तित्व की धनी महिला कथाकारों से सामान्य स्त्री प्रेरणा लेकर निश्चित रुप से अपनी विशिष्ट पहचान बना सकती है।

5) **विवाह एवं स्त्री:** पारंपरिक विवाह संस्था तथा प्रेम-विवाह भी नारी को सुखी होने की गारण्टी नही दे सकते। विवाह कर सुखी जीवन जीने की कामना करने वाली स्त्री हो या अविवाहित रह अपना जीवन बिताने वाली स्त्री हो दोनों का हश्र समान है। इस संदर्भ में शशि गुप्ता लिखती हैं, ''युग की नयी बौद्धिक विचारधारा के फलस्वरुप विवाह न केवल एक सामाजिक और वैयक्तिक समझौता के रूप में देखा गया, वरन् विवाह संस्था की आवश्यकता पर भी संदेह प्रकट किया जाने लगा।''4

उनकी नियति उन्हें पुरुष से मिलने वाले धोखे से बार-बार टकराती है परन्तु आर्थिक आत्मनिर्भरता, संघर्ष, सजगता, अस्मिता, सम्मान, शिक्षा इन बिन्दुओं को सम्मुख रख आत्मकथा लेखिकाओं ने नारी सशक्तिकरण का आन्दोलन अपने दृढ़ संकल्प एवं उर्जाशक्ति, आत्मविश्वास तथा बुद्धिकौशल के बल पर खड़ा किया है। प्रभाखेतान ने ''अन्या से अनन्या'' में जीवन के जो विवरण दिये हैं। उनसे यही स्पष्ट होता है कि प्रभा का सम्पूर्ण जीवन एक लंबा संघर्ष रहा है। बचपन, यौवन, प्रौढ़त्व तीनों ही पड़ावों पर प्रभा को आजीवन संघर्ष से जूझना पड़ा है। डॉक्टर प्रभा का आजीवन शोषण करते रहे और प्रभा इस शोषण के खिलाफ संघर्ष करती रही। प्रभा के इस संघर्ष के सन्दर्भ में डॉ० नीरु कहती हैं, "समाज की बनी बनाई राहों से मुँह मोडकर अपने लिए एक नया रास्ता बनाने का जोखिम उठाती स्त्री को अपनी कहानी, एक संवेदनशील अकेली स्त्री के अपने दृढ़ संकल्प और दुर्विचार हठ के बल पर क्रूर-जड़ समाज से जूझने की कहानी।''5

6) **महिला आत्मकथाओं में स्त्री जीवन का संघर्ष:** भारतीय समाजिक ढाँचे में जहाँ एक ओर पुरुष मजबूती से जमा है वहीं दूसरी ओर नारी के डगमगाते अस्तित्व तथा कमजोर स्थिति के कारण यह ढाँचा ऊपर-नीचे हो चुका है। इसी सामाजिक ढ़ाँचे को सही ढंग से प्रगति पथ पर ले जाने के लिए महिला आत्मकथाकारों ने अपनी आत्मकथाएँ रची है। जिन्दगी के थपेडों से जूझती इन लेखिकाओं ने अपने- अपने रंग भरे है। अपने

घरौदें का नवनिर्माण करते हुए इन्हें जिस संघर्ष से गुजरना पड़ा वो काबिले तारीफ है। महिला रचनाकारों की आत्मकथाएँ अधिकांश पुरुष रचनाओं की आत्मकथाओं की तरह मात्र अहं की संस्तुति और प्राप्त उपलब्धियों का नीरस ब्यौरा मात्र नहीं है, बल्कि जीवन के विरोधी पक्षों का समायोजन होता है, जिन्दगी के गहरे अनुभवों से रची बसी ये आत्मकथाएँ स्त्री जीवन के हाशियेकरण से उद्वेलित दिखती हैं। ये आत्मकथाएँ एक स्त्री की अदम्य साहस और जिजिविषा का प्रत्यक्ष दस्तावेज हैं।

‘कस्तूरी कुण्डल बसै’ की कस्तूरी भी अदम्य साहस और संघर्षशील महिला का जीता-जागता उदाहरण है। जिस समय समूचा भारत स्वतंत्रता संग्राम में प्राणों की बाजी लगा रहा था उसी समय कस्तूरी अपने अपनों के विरुद्ध संघर्ष कर रही थी। उसने पितृसत्ता और सामन्ती वृत्ति के खिलाफ अपना संघर्ष निरन्तर बनाए रखा। छोटी सी बच्ची कस्तूरी ने माँ का जीवन संघर्ष बचपन से बहुत नजदीक से देखा तथा तभी आत्मकथा में इतना सटीक वर्णन वे कर पायी हैं। आगे मैत्रेयी ने ‘गुड़िया भीतर गुड़िया में’ अपना संघर्ष खोल कर रखा है। विवाह, पति, बच्चे, गृहस्थी के चक्कर में फंसी मैत्रेयी का संघर्ष जिन्दगी के हर मोड़ पर है। गाँव-देहात में रहने वाली युवती को शहर के सलीके सीखने के लिए जो जद्दोजहद और संघर्ष करना पड़ा, वह अपने आप मे उपलब्धि है। आत्मकथा में मैत्रेयी ने अपने विगत जीनव की यातना, संघर्ष की स्मृतियों को व्यक्त करते-करते भारतीय पितृसत्तात्मक संस्कृति के परम्परावादी दृष्टिकोण पर पुराजोर प्रहार कर संघर्षशील स्त्री की दास्तान को व्यक्त किया है।

2. निष्कर्ष

महिला आत्मकथा लेखिकाओं का जीवन संघर्षों से युक्त दिखाई देता है। मृदु स्वभाव तथा प्राकृतिक कोमलता के कारण स्त्री हमेशा से अपनी अभिव्यक्ति आँसुओं के माध्यम से करती आयी है। भावों की अभिव्यक्ति का आधार जब कलम बनी तब इन आँसुओं के सैलाब को स्त्रियों ने आत्मकथाओं का रुप दे दिया। संघर्ष तो सभी आत्मकथाओं का मुख्य बिन्दु रहा है और इस संघर्ष के बल पर ही सभी आत्मकथा नायिकाओं ने अपना रास्ता आत्मनिर्भरता की ओर मोड़ दिया। जिसके सहारे वे सजग हुई, अपने अस्तित्व को बरकरार रखने के लिए महिला आत्मकथाकारों का संघर्ष सफल रहा है।

संदर्भ सूची

चंद्रकिरण सौनरेक्सा, पिंजरे की मैना, पूर्वोदय प्रकशन, 2010, भूमिका से
संपा. राजकिशोर, स्त्री, परंपरा और आधुनिकता, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ.सं. 31
भण्डारी मन्नू, एक कहानी यह भी, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 160
डॉ. शशि गुप्ता, प्रेमचंदोत्तर हिंदी उपन्यास, नये नैतिक मूल्य, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999 पृ.सं. 76
नीरु, प्रतिरोध का दस्तावेज महिला आत्मकथाएँ, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं. 85